Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
Volume 2, Issue 1 (Jan – Dec), 2023, Pp 1-6

भारतीय संस्कृति में निहित सहजीवन के सार्वभौम गुणसूत्र

डॉ० सुमन कुमारी (राजन)
सह प्रवक्त्री (संस्कृत विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरूक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ई-मेलः rajansuman2014@gmail.com
दूरभाषः 9416291884

संक्षेपिका

संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का पाठ हमें जो उपदेश करता है वह मनुष्य मात्र के लिए है, उसमें न देश का कोई भेद है और न जाति का। यदि हम मनुष्यों के शांति पूर्वक रहने के उपायों पर विचार करें तो यह तभी सम्भव है जब वे विचार विमर्श के लिए एक समिति में एकत्र हों। ऐसे में मनुष्यों के हृदयों में जब कभी युद्ध से बचने और मिलजुल कर रहने की इच्छा उत्पन्न हुई तब उन्होंने एक समिति का निर्माण किया। वेद समस्त विश्व के लिए हैं। मानव मात्र के लिए हैं। देश और काल की सीमाओं से परे हैं। मनु ने सदियों पहले अपनी मनुस्मृति में कहा था कि वेद पितृजनों, देवों तथा मनुष्यों सबके लिए स्थायी, सनातन ज्ञान के चक्षु हैं आज विश्व के विभिन्न देंशों में मानवाधिकारों की चर्चा जोरों पर है। उनको लागू करने की आवश्यकता है। किन्तु वेद ने हजारों वर्ष पूर्व मानवतावाद का, समस्त मानव समाज की एकता और समानता का सन्देश ऋग्वेद में दिया था।

कुंजी शब्द - ऋग्वेद, सिद्धांत, मंत्रणा, संगठन, अप्रमेय, अपौरूषेय, यजुर्वेद, सुविज्ञात, अथर्ववेद, आंतकवाद, संवाद, खाद्यान्न, वैचारिक, मानवतावादी।

शोधपत्र

दूसरे महायुद्ध में लगे हुए आघातों से घायल और भावी युद्ध की आशंका से डरे हुए विश्व के निवासी अनुभव करने लगे हैं कि मनुष्य जाति के घावों पर मरहम भारतीय सांस्कृतिक मूल्य ही लगा सकते हैं और भावी युद्ध का जो बादल पश्चिम से उठ रहा है उसे भी टाला जा सकता है। इस बात को संसार के सभी विचारकों ने स्वीकार किया है कि शान्ति भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व है। यदि हम भारत के पंचशील, अंहिसा तथा सर्वभूतदया आदि सिद्धान्तों का बीज तलाश करना चाहें तो हमें संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का पाठ करना चाहिए। उसमें जो उपदेश है वह मनुष्य मात्र के लिए है उसमें न देश का कोई भेद है और न जाति का। इस सूक्त में बतलाया गया है कि यदि मनुष्य सुख समृद्धि चाहता है तो उसे इस व्यावहारिक धर्म का पालन करना चाहिए।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।[1]

मनुष्य साथ मिलकर परस्पर हित के सम्बन्ध में मन्त्रणा अर्थात् विचार करें यह तभी सम्भव है जब सब देशों और जातियों की समान समिति हो, जिसे आज संघ-मण्डल आदि नामों से पुकारा जाता है। वेद में उसके लिए समानी समिति शब्द का प्रयोग है। मंत्र के पहले पद का अभिप्राय यह है कि मनुष्यों को शांति पूर्वक रहने के उपायों पर विचार करना होगा और यह तभी सम्भव है जब वे विचार विमर्श के लिए एक समिति में एकत्र हों। वेद का यह

विधान कितना मौलिक है यह इतिहास से प्रमाणित होता है। मनुष्यों के हृदयों में जब कभी युद्ध से बचने और मिलजुल कर रहने की इच्छा उत्पन्न हुई तब उन्होंने एक समिति का निर्माण किया है। कभी उसका नाम यू०एन०ओ० के नाम से पुकारा गया। मूलभूत बात यह है कि सब देशों के निवासी अपने प्रतिनिधियों द्वारा एकत्र होकर परस्पर प्रेम पूर्वक रहने के उपायों पर विचार करें।

उसका परिणाम क्या होगा यह ऋचा के दूसरे पाद में बतलाया है-

'समानं मनःसह चित्तमेषाम्'।[2]

आपस में मिलकर बैंठने का परिणाम यह होगा कि तुम एक दूसरे के मन की बात को जान सकोगे। संसार के बहुत से युद्ध और झगड़े उन भ्रान्तियों के परिणाम होते है जो आपस में बातचीत न करके केवल सुनी सुनाई बातों से उत्पन्न होती है। निकट से निकटतम मित्र भी यदि चिरकाल तक आपस में विचार न करे और इधर-उधर से सुनी हुई बातों पर विश्वास करते रहें तो वे एक दूसरे के घोर शत्रु बन सकते हैं। दूरी प्रायः अविश्वास को उत्पन्न करती है और परस्पर अविश्वास ही संसार की अधिकांश लड़ाइयों का कारण बनता है। जब पृथ्वी के भिन्न - भिन्न देशों के लोग प्रतिनिधियों द्वारा मिलकर शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करने के उपायों पर विचार करेंगे तब उनके मन एक प्रकार से सोचने लगेंगे। हृदय समान रूप में अनुभव करने लगेंगे। मन और हृदय की अनुकूलता उत्पन्न होने पर कुछ विशेष परिस्थितियां उत्पन्न होगीं ऋग्वेद का विचार है कि

संगच्छध्वं संवदध्व सं वो मनांसि जानताम्।।[3]

व्यक्ति और भिन्न - भिन्न समाज जब एक दूसरे की अनुकूलता में चलने लगेंगे, एक दूसरे को प्रिय और हितकारी लगने वाली बातें करने लगेंगे और प्रायः एकमत होकर कार्यनीति का निर्माण किया करेंगे तब संसार एकरूप हो जाएगा। संगठन सूक्त बड़ी दृढ़ता से इस विचार को दोहराता हुआ कहता है कि -

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।[4]

ऐ मनुष्यों! इस प्रकार के व्यवहार से तुम्हारें हृदयों की भावनाएं एक दूसरे के अनुकूल हो जायेंगी, हृदय समान रूप से अनुभव करने लगेंगे, मन परस्पर विरोधी विचार करना छोड़ देंगे, और तुम सब भली प्रकार से एक दूसरे के साथ जीवन व्यतीत करोगे। ''सुसहासति'' तीन शब्दों से मिलकर बना है, सु, सह, असति। सु का अर्थ है भली प्रकार सह का अर्थ है साथ, और असति अर्थात उद्देश्य उन्हें भली प्रकार, मिलजुल कर साथ रहने के योग्य बनाता है। आजकल विश्व की सबसे बड़ी समस्या यह है कि जातियों और व्यक्तियों को परस्पर मिलकर मित्रों की तरह रहना कैसे सिखाया जाये। शान्तिपूर्वक मिलकर रहने को आजकल की राजनीति की भाषा में Co-existence कहा जाता है। इस शब्द से केवल साथ रहने का भाव प्रकट होता है, भली प्रकार साथ रहने का नहीं। यदि Co-existence की जगह 'सुसहासति' इस शब्द का प्रयोग किया जाय तो बहुत अधिक उपयुक्त होगा।

भारतीय संस्कृति वेदमूलक है। वेद के उदात्त विचार ही भारतीय जीवन मूल्य है। यह जीवन मूल्य केवल भारत के नागरिकों के लिए ही सहभाव और सहजीवन के प्रस्तावक नहीं हैं अपितु समग्र विश्व के लिए शान्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

वेद का महत्त्व केवल विश्व का प्राचीनतम साहित्य होने के नाते नहीं है अपितु इसलिए भी है कि वेद समस्त विश्व के लिए हैं। मानव मात्र के लिए हैं। देश और काल की सीमाओं से परे हैं। मनु ने सदियों पहले अपनी

मनुस्मृति में कहा था कि वेद पितृजनों, देवों तथा मनुष्यों सबके लिए स्थायी, सनातन ज्ञान की आँखें हैं, वेद अपौरूषेय और अप्रमेय हैं-

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।
अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः ।।[5]

यजुर्वेद कहता है कि वेद की कल्याणी वाणी सब जनों के लिए है चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, और वैश्य अथवा अपने प्रिय लगने वाले या अप्रिय, कोई भी क्यों न हो किसी भी वर्ग का क्यों न हो। सब जनों के लिए सर्वत्र उपदेश करूं।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणायच ।।[6]

वेद सबके लिए कल्याण की बात करते हैं। जिस अथर्ववेद के बारे में यह कहकर मिथ्या प्रचार किया गया कि यह जादू टोने का वेद है, इसमें मारण मोहन, उच्चाटन के मंत्र हैं, वह अथर्ववेद सबकी कल्याण कामना करते हुए कहता है कि माता पिता का कल्याण हो, गायों का कल्याण हो। संसार भर के पुरुषों का कल्याण हो। समस्त विश्व हमारे लिए सुभूत और सुविज्ञात हो-

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ।।[7]

अथर्ववेद आगे कहता है कि यह पृथ्वी, द्युलोक हमारे लिए कल्याणकारक हों। हम दैवी, ईश्वरीय नाव पर सवार होकर कल्याण के लिए आगे बढ़ें-

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसो अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।।[8]

यही नहीं वेद कहता है कि धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र है-

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ।।[9]

इससे आगे बढ़कर वेद कहता है कि यह धरती सब मानवों के लिए है। अथर्ववेद कहता है कि यह पृथ्वी भिन्न-भिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोगों को धारण करती है। यह भिन्न-भिन्न धर्मा, मतों को मानने वाले लोगों को शरण देती है। यह धरती धेनु और गाय की तरह हमारे लिए कल्याण की हजारों अजस्र और अबाध धारायें बहायें-

जनं विभ्रति बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।[10]

वेदों के इसी विश्वव्यापी समस्त मानव-कल्याणवादी, दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए बर्तानिया विश्वकोश में लिखा है कि वेदों के इसी दृष्टिकोण के कारण यूरोपीय एवं अमरीकी विद्वानों ने इनके अध्ययन में गहरी रूचि ली।

अथर्ववेद कहता है कि हे मनुष्यो! तुम सबके लिए पेयजल की व्यवस्था समान हो। तुम सब मानवों के लिए अन्न का विभाजन भी समान हो । तुम सब मानव एक ही जुए की भांति जुड़कर रहो । जैसे रथ की नाभि में स्थित आरे परस्पर जुड़कर रहते हैं। ऐसे ही तुम सब मानव परस्पर मिलकर एक दूसरे से जुड़कर रहो-

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि । ॥
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ।।[11]

वेद के इन मंत्रों में विचारों की कितनी ऊँची उड़ान है। वेद समस्त मानव जाति के कल्याण की बात करते हैं। समस्त मानव समाज में परस्पर मेल, सहयोग, संवाद की बात करते हैं। सब मनुष्यों के मन की एकता, हृदय की समानता, विचारों की समानता की बात करते हैं। सब मनुष्यों के हृदय, मन, विचार और संकल्प एक हो जाए? तो मानव जाति का कल्याण न हो जाए किन्तु आज मानव समाज में, परस्पर एकता, हृदय और मन की समानता तथा विचारों की एकता कहाँ है और इसी कारण विश्व में अशांति, घृणा, वैर, विरोध हिंसा एवं युद्ध का वातावरण है। आज मानव समाज परस्पर वैर, विरोध, घृणा एवं हिंसा की अग्नि में जल रहा है। समूचा विश्व इसी विद्वेष एवं घृणाजन्य आतंकवाद से पीड़ित है। एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका सभी जगह आतंकवाद का साया मंडरा रहा है।

भारत एक लम्बे समय से आतंकवाद की त्रासदी से पीड़ित हैं। कई हजार लोग इस कारण से मारे जा चुके हैं। अफगानिस्तान पिछले दो-दशकों से इस आतंकवाद से ग्रस्त है। उधर श्रीलंका और नेपाल अन्य किस्म के आतंकवाद से पीड़ित हैं। इजराइल भी लंबे समय से अपने ही निकटतम पढ़ोसी गाजा पट्टी में हमास नामक आतंकी संगठन से जूझ रहे है और स्वंय गाजा पट्टी के सामान्य नागरिक भी इस आतंकवाद की पीड़ा को झेल रहें है। यूक्रेन और रूस लम्बे समय से युद्ध की भयंकर स्थिति का सामना कर रहे है। अफ्रीका में अमरीकी दूतावासों पर आतंकवादी हमले हुए। सैकड़ों बेकसूर लोग मारे गये। इस प्रकार पूरा विश्व या अन्तर्राष्ट्रीय मानव समुदाय आतंकवाद की लपेट में है। इसी कारण आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की घोषणायें हो रही हैं। कारण, इसके पीछे विचारों की असमानता है। विश्व के विभिन्न मानव समुदायों में हृदय और मन की असमानता है। उनके संकल्प, उनके भाव अलग-अलग है। इस्लामी कट्टरपंथी विश्व के अन्य धार्मिक संगठनों को पसन्द नहीं करते। इसलिए उन्होंने विश्वव्यापी जेहाद छेड़ा हुआ है।

इसलिए वेद ने कहा था सब मनुष्य परस्पर मिलकर चलें। परस्पर मिलकर संवाद करें। सबके विचार समान हों। सब मनुष्य के चिन्तन-सोच में समानता हो। इसके साथ सबका हृदय एक समान हो, सबका मन एक समान हो।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।[12]

जब सबके हृदय और मन एक समान होंगे तभी मनुष्यों, मानव समुदाय का विश्व स्तर पर संगठन अच्छा होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ यह कार्य कर सकता है। यही नहीं वेद के मंत्रो में यह भी कहा गया है कि सब मनुष्यों के लिए अन्न जल की व्यवस्था समान हो-

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः।[13]

किन्तु इस दृष्टि से विश्व में भारी असमानता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में गरीबों की संख्या में कोई कमी नहीं आई आज विश्व में दो अरब लोग गरीब है। एक ओर सुडान तथा सोमालिया जैसे देशों में कई लाख भूख एवं गरीबी से मर चुके हैं तो दूसरी और संसार के कुछ लोग आर्थिक विश्व के 80 प्रतिशत उत्पादन साधनों पर 20 प्रतिशत अमीरों का कब्जा है। यही नहीं संयुक्त राष्ट्र संघ की उक्त रिपोर्ट के अनुसार संसार के सबसे निर्धन 48 देशों में मूल विकास उत्पादन से भी अधिक पूंजी संसार के 3 सर्वाधिक धनी व्यक्तियों के पास है। इतनी भयानक सामाजिक व आर्थिक विषमता !! क्योंकि इन देशों एवं उन व्यक्तियों के पास

दूसरों के लिए, संसार के अन्य लोगों के लिए, उनके हित एवं कल्याण के लिए सहृदयता, सौमनस्य, सौहार्द, मन की हृदय की समानता नहीं है। यूरोप के देश प्रतिवर्ष 115 बिलियन डालर शराब तथा सिगरेट पर ही खर्च कर डालते हैं। यदि यही पैसा बच्चों की शिक्षा पर खर्च किया जाएं तो दुनिया से अनपढ़ता के शाप को मिटाया जा सकता है और विश्व के लाखों अनपढ़ बच्चों को पढ़ाया जा सकता है तथा हजारों गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जा सकती है किन्तु सवाल तो मन की एकता, हृदय की समानता का है परस्पर संवाद एवं सहयोग तथा एकता का है।

स्वयं भारत में भी अन्न जल का विभाजन समान नहीं है। सबको पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है। सबको भोजन उपलब्ध नही पंचवर्षीय योजनाओं का लाभ सब तक नहीं पहुँच पाया। देश की एक तिहाई आबादी भूख और गरीबी का जीवन बिता रही है। जबकि देश के खाद्यान्न भंडार केन्द्रीय कृषि मन्त्री के अनुसार भरे पड़े हैं। उन भंडारों से आवंटित अन्न के भाग को राज्यों द्वारा उठाने की उचित व्यवस्था नहीं की जा रही। विश्व में आज जितना युद्ध और अस्त्र शस्त्रों के लिए परमाणु हथियारों पर खर्च हो रहा है। उसका आधा या एक तिहाई भाग भी मानव कल्याण पर खर्च किया जाए तो संसार के करोडो लोगों की गरीबी, भुखमरी और निरक्षरता दूर हो सकती है किन्तु प्रश्न तो मन की एकता, हृदय की समानता और चिन्तन की समानता का है। जब तक मनुष्यों के हृदय और मन नहीं मिलेंगे, मानव समुदायों में विचारों, संकल्पों की एकरूपता, समानता नहीं आएगी, तब तक मानव समाज की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ नहीं हो सकती। इसलिए वेद के उपर्युक्त मंत्रों पर वेद की इस विचाराधारा पर बार-बार विचार करने की आवश्यकता है। मानव मात्र का कल्याण-मानव समाज में सब प्रकार की समानता, वैचारिक समानता, राजनीतिक एवं आर्थिक स्तर पर समानता तथा सामाजिक स्तर पर समानता, समस्त मानव समाज का सब प्रकार से कल्याण-यही वेद का मानवतावाद है और यही वेदों का मानवतावादी संदेश है। आज स्थान और देश की दीवारों से रहित विश्व की बात की जा रही है सबके लिए विश्व को एक घर के रूप में बनाने की बात की जा रही है। यह अच्छी बात है। 21वीं सदी में उज्जवल भविष्य और शान्तिप्रिय विश्व की कामना है।

मानवता और मानव जाति के कल्याण की बात की जा रही है। आज विश्व के विभिन्न देंशों में मानवाधिकारों की चर्चा जोरों पर है। उनको लागू करने की आवश्यकता है। यह शुभ संकेत है। किन्तु वेद ने हजारो वर्ष पूर्व मानवतावाद का, समस्त मानव समाज की एकता और समानता का सन्देश ऋग्वेद में इस प्रकार दिया था। वेद कहता है हमें सब ओर से कल्याणकारी और श्रेष्ठ विचार प्राप्त हों।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।[14]

सन्दर्भ सूची :-

1. ऋग्वेद, 10.191.3
2. ऋग्वेद, 10.191.3
3. ऋग्वेद, 10.191.2
4. ऋग्वेद, 10.191.4
5. मनुस्मृति : 12.94

6. यजुर्वेद : 26.2
7. अथर्ववेद : 1.31.4
8. अथर्ववेद : 7.6.3
9. अथर्ववेद : 12.1.12
10. अथर्ववेद : 12.1.45
11. अथर्ववेद : 3.30.6
12. ऋग्वेद : 10.191.4
13. अथर्ववेद : 3.30.6
14. ऋग्वेद, 1.89.1